

भारतीय बैंकों द्वारा अपने वदेशी परचालनों में की जा रही कटौती

चर्चा में क्यों ?

पछिले माह कई भारतीय बैंकों द्वारा उनके वदेशी ऑपरेशनों या परचालनों में कमी किये जाने संबंधी घोषणाएँ की गईं। वे या तो अपनी शाखाओं या वदेशी सहायक कंपनियों को बंद कर रहे हैं, या फरि कुछ देशों से पूरी तरह अपने ऑपरेशन समाप्त कर रहे हैं। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र के कई प्रमुख बैंक इस समय वापसी के मोड़ में हैं।

प्रमुख बंदि

- खबरों के मुताबकि भारतीय स्टेट बैंक (SBI) चीन, श्रीलंका, ओमान, सऊदी अरब, फ्रांस और बोत्सवाना में 6 शाखाओं को बंद कर रहा है।
- कैनरा बैंक अपनी ब्रिटेन, बहरीन और शंघाई स्थिति तीन शाखाओं को बंद करने वाला है एवं रूस स्थिति एक संयुक्त उपक्रम में अपनी हसिसेदारी का 50 प्रतिशत एसबीआई को बेचने की तैयारी में है।
- अपनी वदेशी शाखाएँ बंद करने वाले अन्य बैंकों में बैंक ऑफ इंडिया और आईडीबीआई बैंक भी शामिल हैं।
- इस वापसी का तात्कालिक कारण पछिले कुछ वर्षों में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का खराब प्रदर्शन रहा है।
- बढ़ते घाटे, बैंड लोन की समस्या, नई पूंजी की आवश्यकता, कमजोर बजटीय सहायता, स्टॉक मार्केट में कमजोर वैल्यूएशन और पछिले दिनों सामने आए धोखाधड़ी के मामलों से ऐसा माहौल नरिमति हुआ, जिसने सरकार को बैंकों के वरिद्ध एक्शन लेने हेतु बाध्य किया है।
- भारतीय बैंकों की लगभग 159 शाखाएँ अन्य देशों में संचालित हो रही हैं और उनमें से एक चौथाई घाटे में चल रही हैं।
- वदेशी परचालनों में बड़ी मात्रा में धन का व्यय होता है। सरवप्रथम, कई वदेशी जगहों पर परचालन हेतु अत्यधिक पूंजी की आवश्यकता होती है। साथ ही, बड़ी मात्रा में लाइसेंस शुल्क देना पड़ता है।
- कुछ भौगोलिक क्षेत्रों में तो यह व्यय इतना अधिक होता है कि वहाँ कुछ भारतीय बैंकों को मलिकर मजबूरन संयुक्त उपक्रमों में परचालन करना पड़ता है।
- बुनियादी ढाँचे की लागत, जिसमें श्रमबल संबंधी खर्चे भी शामिल हैं, के कारण भी व्यय में वृद्धि होती है।
- लंदन, सांगीपुर, टोक्यो या हॉन्गकॉन्ग जैसे अंतरराष्ट्रीय वित्तीय केंद्रों में वशिष रूप से उच्च परतसिपर्द्धा और बहुत कम लाभ के कारण बैंकों की ब्रेक-ईवन अवधि भी बढ़ गई है।
- वदेशी परचालनों को संभाल चुके कई अनुभवी बैंकरों का कहना है कि बैंकों को वदेशों में मुनाफा कमाना शुरू करने में कम से कम पाँच साल का समय लगता है, जबकि भारत में यह अवधि 2 से 3 वर्ष के बीच है।
- यहाँ तक कि अधिकांश सुव्यवस्थिति परचालनों का लाभ भी वदेशों में बहुत अच्छा नहीं रहता है।
- एसबीआई का वदेशी ऋणों पर अरजति शुद्ध ब्याज मार्जनि घरेलू परचालनों के 2.61 प्रतिशत के मुकाबले 1.16 फीसदी ही है।
- एसबीआई के वरिष्ठ अधिकारियों ने पहले भी बताया है कि घरेलू परचालन में इक्वटी पर रटिर्न आमतौर पर 15 से 18 प्रतिशत होता है, जबकि वदेशी परचालनों में यह 5 से 7 फीसदी ही होता है। और लंबे समय से यह पैटर्न व्यापक रूप से अपरविरतित रहा है।
- इसलिये बैंकों द्वारा वदेशों में कारोबार करने का नरिणय हमेशा बड़ी सतर्कता और चयनात्मकता से ही लिया जाता रहा है। गुजराती और संधी समुदायों द्वारा भारतीय बैंकों के वदेशों में वसितार हेतु प्रयास किये जाते रहे हैं। इनके कारोबार कई देशों तक फैले हुए रहते हैं।
- ये समुदाय सामान्यतः बैंकों को एक नश्चिति मात्रा में व्यवसाय सौंप कर, वहाँ शाखा खोलने हेतु प्रोत्साहित करते हैं।
- कभी-कभी कूटनीतिक और सामरिक कारणों से भी वदेशों में शाखाएँ खोली गई हैं। फरि चाहे वे वहाँ स्थिति भारतीय उच्चायुक्तों के सक्रिय समर्थन से खोली गई हों या सहयोगियों के साथ संबंधों और व्यापार को सुधारने के लिये। ऐसा हालिया उदाहरण इजराइल का लिया जा सकता है।
- वदेशों में स्थिति भारतीय बैंकों की शाखाएँ अभी भी भारतीय कनेक्शन वाले समुदायों को छोड़कर वहाँ के स्थानीय लोगों को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाई हैं।

आरबीआई का रुख

- बैंकरों के अनुसार, आरबीआई वर्ष 2000 तक भारतीय बैंकों को वदेशों में जाने के अनुमति देने के मामले में रूढ़िवादी था। बाद के वर्षों में इसके रुख में नरमी आई और इसने अपने नयिमें में बदलाव किया।
- नयिमें में नरमी के कारण वर्ष 2005 से 2011 के बीच कई बैंकों ने वदेशों में अपने परचालनों का वसितार किया।
- दलिचस्प बात यह है कि निजी बैंकों की वदेशों में केवल सीमित उपस्थिति है।
- यह देखते हुए कि वदेशों में रटिर्न कम प्राप्त होता है, निजी बैंकों ने वदेशों में पूंजी परनिियोजन में सार्वजनिक बैंकों की अपेक्षा अधिक सतर्कता बरती है।

